रात्रि क्लास 14/12/68 :- तुम लोग चाहते होंगे हम जल्दी-2 स्वर्ग में जावें? (नहीं) यहाँ यह वण्डरफुल है। सतयुग में फिर भी गृहस्थ व्यवहार हो जावेगा। यह पढ़ाई है वण्डरफुल। देवताएँ भी चाहते हैं ब्राह्मणों के साथ रहें। जिनमें ज्ञान नहीं है वह इतना सुख नहीं उठा सकते, नहीं तो पैराडाइज़ का(के) नाम (से) लालसा(लालच) होता है जल्दी जावें; परन्तु अभी पढ़ाई कहाँ पढ़े हैं सभी। ऐसे पढ़े हैं जो राजा बन न सके। राजा बनने लिए कर्मातीत अवस्था चाहिए। यह फिर ड्रामा की वृद्धि हो जाए। बाप को भी बुलाते हैं आकर पढ़ाओ। तो मुख्य है पढ़ाई। अक्सर करके जो भी आते हैं उनको यह नहीं समझाते हैं सुप्रीम बाप, टीचर, गुरु है। जो निश्चय बुद्धि हो झट ऐसे बाप के पास भागे। देखें कैसे ब्राह्मण बच्चों को पढ़ाते हैं। वण्डर देख भागे। एक ही निराकार बाप है जो बाप, टीचर, गुरु भी है। और कोई भी आत्मा को ऐसे कब नहीं कहेंगे। सिद्ध होता है कोई भी आत्मा को यह कह नहीं सकते। इनके ऊपर बहुत अच्छी समझानी है; परन्तु बच्चे ऐसे प्वाइंट समय पर भूल जाते हैं। बाद में स्मृति आता है। फिर जो आते हैं उनको समझाया जाता है। जो फिर आते हैं तो समझा जाता है यह अच्छा बच्चा बनेंगे बाप का। आते नहीं तो समझा जाता है देरी से आवेंगे। बाकी आने वाले तो सभी हैं। प्लैन्स(नक्शा) भी स्टूडेंट को अच्छा मदद करती है। कहाँ उन्हों की प्लैन, कहाँ तुम्हा(रा)। पहले यह चित्र नहीं था। तुमको बाप की कशिश हुई तब भागे, फिर बहुतों को समझाने लिए यह बने हैं। तुम समझा सकते हो देवताओं को मन की शांति है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही उन्हों को मिलती है। तुम समझते हो युद्ध के मैदान में युद्ध करते रहते हैं और रचयिता और रचना का नॉलेज समझाकर नास्तिक को आस्तिक बनाते रहते हैं। बेहद के बाप को तुम जानते हो, मानते हो। दोनों बाप को मानते हो, जानते हो। सभी बच्चों आत्माओं का बाप है। सर्व की सद्गति दाता है बाप। बच्चे मीठे हैं, बाप की सेवा करते हैं तो खुश होते हैं। याद की यात्रा का तो हरेक खुद जाने। याद करते होंगे तो अपना ही कल्याण करते होंगे। योग है गुप्त। बताते हैं तो मालूम पड़ता है। अगर लिखते ही नहीं हैं तो कैसे मालूम पड़ेगा। सर्जन को सभी बीमारी सुनानी ज़रूर पड़े। तो 100% वृद्धि होने से छूट जावेंगे, नहीं तो वृद्धि होते-2 फिर पक्के हो जाते हैं। जैसे जेल बड्र्स हो जाते हैं। यह तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की समझानी अभी ही मिलती है। सभी तमोप्रधान हैं। इसलिए सतोप्रधान बनने ज़रूर हैं। एक ही बाप कहते हैं यह 5 तत्व भी पावन बनने वाले हैं। अभी प्रकृति तमो॰ है, वह सतोप्रधान बनने हैं। सतोप्र॰, तमोप्र॰ में रात-दिन का फर्क है; परन्तु पत्थर बुद्धि तमोप्रधान होने कारण समझते नहीं हैं। मनुष्यों को यह पता नहीं है ल॰ना॰ ही तमो॰ बनते हैं। विकार में जाते हैं तो निर्विकारियों को माथा टेकते हैं। पूज्य से पुजारी कैसे बनते हैं। तो समझेंगे अभी सतो॰ ज़रूर बनना है। हम सो की समझानी भी ज़रूर देंगे तो होंगे। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।